

नैतिक मूल्यों का निर्धारण



नैतिक मूल्यों का निर्धारण

परिचय

'मानव मूल्य' में जिस शब्द को समझने की जरूरत है वह है मूल्य। मूल्य की व्याख्या विभिन्न क्षेत्रों में अपने-अपने तरीके से होती है। मूल्यों का अर्थ गहरे नैतिक आवरणों से है जिन्हें उपलब्ध कराने के लिये नैतिक नियम बनाए जाते हैं। मूल्यों के संबंध में समाज की समझ महत्वपूर्ण होती है जो कि सामाजिक जीवन को संभव व श्रेष्ठ बनाने के लिये आवश्यक है।

नैतिक मूल्यों का विकास समाज के अंदर होता है परंतु, इनके निर्धारण एवं विकास में अनेक आधारों की भूमिका होती है। जैसे- भौगोलिक परिस्थितियाँ, अन्य समाजों से अंतःक्रिया, जनांकिकीय, सांस्कृतिक सापेक्षता, अर्थव्यवस्था आदि।

1. भौगोलिक परिस्थितियाँ: किसी प्रदेश विशेष की भौगोलिक परिस्थितियाँ वहाँ विभिन्न मूल्यों के निर्धारण में महती भूमिका निभाती हैं। जैसे:

(i) तापमान: अरब देशों में प्रायः धूल भरी आँधियाँ चलती रहती हैं। इनसे बचने के लिये वहाँ महिलाएँ प्रायः बुर्का तथा पुरुष भी ज्यादा वस्त्र पहनते हैं। वहीं, हम देखते हैं कि उष्णकटिबंधीय गर्म क्षेत्रों के लोग प्रायः ढीले-ढाले तथा कम वस्त्र पहनते हैं। जैसे-जैसे हम ठंडे प्रदेशों (यूरोप) की ओर जाते हैं तो वहाँ ज्यादा वस्त्र पहने जाते हैं तथा खान-पान में मद्य (Alcohol) का प्रयोग सामान्य माना जाता है।

(ii) उपजाऊ भूमि: जिन प्रदेशों की भूमि उपजाऊ होती है, वहाँ प्रायः शाकाहार का प्रचलन मिलता है, वहाँ इसके विपरीत परिस्थितियों में माँसाहार की प्रवृत्ति पाई जाती है।

(iii) उच्चावच: पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में धैर्य और मेहनत जैसे मूल्य प्रायः मैदानी क्षेत्रों के लोगों में अधिक पाए जाते हैं क्योंकि उनका जीवन से संघर्ष ज्यादा होता है।

2. अन्य समाजों से अंतःक्रिया: जिन ग्रामीण या आदिवासी क्षेत्रों का संपर्क अन्य समाजों/गाँवों से कम रहता है, उनमें रूढ़िवादिता (Orthodoxy) अधिक पाई जाती है। इसके विपरीत किसी राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित गाँव या किसी बड़े शहर में मूल्यों में गतिशीलता (Flexibility) अधिक मिलती है।

3. जनांकिकीय: विभिन्न समाजों में जनांकिकीय भी मूल्यों के निर्धारण में अहम भूमिका निभाती है। जनांकिकीय के अंतर्गत विभिन्न पहलू आते हैं- लिंग अनुपात, जीवन प्रत्याशा, आबादी आदि।

(i) लिंग अनुपात: जिन समाजों में लिंग अनुपात बराबर होता है, वहाँ प्रायः एक विवाह की परंपरा मिलती है। वहीं, यदि इस अनुपात में बहुत अधिक भिन्नता हो तो प्रायः बहुपत्नी या बहुपति विवाह का प्रचलन देखने को मिलता है। उदाहरण के तौर पर आज भी देहरादून (भारत) के पास एक आदिवासी इलाके के खस समुदाय में बहुपति प्रथा का प्रचलन है।

(ii) जीवन प्रत्याशा: जिन समाजों में जीवन-प्रत्याशा बहुत अधिक होती है और संसाधन भी पर्याप्त होते हैं, वहाँ वृद्धों को ज्यादा सुविधाएँ और सम्मान मिलता है जैसे- जापान में। परंतु यदि जीवन प्रत्याशा अत्यधिक हो और संसाधनों की कमी, तो उस समाज में वृद्धों की स्थिति शोचनीय हो जाती है। उदाहरण के तौर पर उत्तरी ध्रुव पर पाई जाने वाली ऐस्कीमो जनजाति में वृद्ध, संसाधनों के अभाव में युवा पीढ़ी के भविष्य के लिये अपनी इच्छा से प्राण त्याग देते हैं।

(iii) आबादी: मूल्यों के निर्धारण में समाज की आबादी भी अहम भूमिका निभाती है। जैसे- जिन राष्ट्रों में आबादी कम है, वहाँ प्रायः गर्भपात की स्वीकृति नहीं दी जाती है। वहीं, अधिक आबादी वाले राष्ट्रों में इसके विपरीत स्थिति मिलती है।

4. आर्थिक कारक: किसी समाज में अर्थव्यवस्था का क्या प्रारूप है, यह निश्चित तौर पर वहाँ कुछ मूल्यों का निर्धारण करता है। जैसे- पूंजीवादी देशों (अमेरिका आदि) में 'व्यक्तिवाद' को अहमियत मिलती है तो समाजवादी देशों (जैसे- व्यूवा) में 'सामाजिक योगदान की इच्छा' का मूल्य विकसित होता है। अर्थव्यवस्था के विकास के स्तर के आधार पर भी मूल्यों का निर्धारण होता है। जैसे- जिन समाजों/राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था में प्राथमिक क्षेत्र (खेती आदि) की प्रधानता है वहाँ भौगोलिक स्थिरता के प्रति रुझान, रूढ़िवादिता, पर्यावरण के प्रति लगाव की प्रवृत्तियाँ मिलेंगी। वहीं जिन समाजों/राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था में तृतीयक क्षेत्र (सेवा क्षेत्र) की प्रधानता है, वहाँ के मूल्यों एवं जीवन में प्रायः गतिशीलता, बहुसंस्कृतिवाद की स्वीकृति तथा पर्यावरण के प्रति अरुचि जैसी प्रवृत्तियाँ मिलती हैं।

//